





श्रीगणेशाय नमो ॥ ॥ अथ श्रीसूर्यव्रत कथालिख्यते ॥ ॥ शुद्धिं करि वा
 चं प्रादित्यव्रतगर्भा विधि कथा सुपुत्रनी जधि करि रोजाले श्रीकृ
 ल्मथारु विंती गन्धा ॥ श्रीकृष्णो वाच ॥ हेतुं धिं करि रोजाले प्रादित्यका कथा
 व्रतवीधि मकरं हं हं सावधान यक विजगरी सुं नु हं वत् ॥ आदित्य
 भन्पाका देवता कस्तान् भन्पास वे देवता भंडा श्रेष्ठ स वे भु
 मं राहु लमा भं ध काल भं धा को रुं नालो गरी हा हा वीसा फ प
 भन्नु केन स वे व गे व र्दे विजे ती दि पृथि वि प वि व ग ग्या का य
 ला प्रादित्य दमा वि ह्नु महे ष्वर ईन वात रुं पती भया का का ति
 क मा त प्र नि आ दि त्य वार पारि वर्त लि नु व र्वा देन मा का ति को मा
 व्रत प्रातीका गनुं यो व्रत ज तले गला यो मन ल चिता श्रीसूर्य कने अ
 र्य र्वा ली सो पु र्वा हो ला को ती गे न ग ग्या जा ती को फल य क प्र र्थ
 ग ग्या मा पा र्द ॥ प्रथम प्रतिमा पना उं नु नाई सु पारि नि रिव ल
 ने वी द्य रा या दि ता मा गिले श्री सूर्य का पुजा गरी ब्राह्मण लाई
 को ल वाई कथा ले नु ॥ शुक्ल पुष्य शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल
 क र ॥ मा के र ड त्या त व्रत शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल शुक्ल
 धि करि र्धर्म मध्य परा पुर्व माना ति तद सु र्य वत श्रु तेन

राजाले गन्या को मक हंहु सुनु हवम अतन पुरन गरका अविपति श्री वंन
 अशोन राजा का धन धाने चतुवर्ग पुरा भया का धर्म मा अवंन ल
 हरका प्रजा हह पनी जत्ते राजा धर्म मा तस्ते प्रजापति धर्म मा चेष्टा
 गन्या का आ कृता आ कृता इमा न कुल धर्म मा र ह्या को थिया इन रा
 जा का अह ह्यादी सम्पूर्ण देश ला माल कर लेज न भया का संता न र
 हेन ह अ पुता र ह्या हने ए राजाले लोचना गन्या हे देवे मेरो संता न हने
 मेरा मेले काल मा कया का ल गरी मेरो उच्चार क ल्ले गनी कया उ या यग
 चो हो भरी चीज ना गरी आ कृ का नी सर्दा र देउ भ चार का जि सर्दा र
 विजि गहने हे महा एज उ मर का ले अने ग कु ए ड ह संदेह न मानु ह व म
 भरी अने ग जा आ मुनी जत उ प कारी ल्या ह उ प कार गनी ला या उ प कार ले
 भये न र फेरि एजा चित ना गहने मेरो क्या अ भा ग ले हो सज सा मा पी दे
 रा संसा मा को हि हने मेरा जम धि कार हो भनि महा विलास गरि रह काम
 मा पुन राजा विला पले पु न मे र ह्या का वेला मा नारद मुनी ग या र आसी
 र वाद दिक्ष भया ॥ नारद देव्यार राजाले पाउला गुह व म भरी डाकी आ
 सन मा बला ई मुनि का पुजा आदर भाव गरि एजा विजि गहने भो व ह
 पुन देव गिरी नारद हे नारद मुनी मेरो संता न हने अ पुता ह न या नी हंका
 आशिवा द ले अ ह ह्यादि संपूर्ण पुन हने पुन ह्या उ या य म लाई प्रसन्न
 ह व म अ पुता ले मनुषी गनी हने भरी विजि गदी राजाले मुनि मया को

देवि नारद काचित्तमावहत् कुरुमथोरनारद विंगर्हन्हेमाहा
 राजकुन्दहवत् ॥ सुवर्णीरासिदानंचतथाभुमिमीवताचित ॥ तप
 त्यानेवजग्यानां प्रपुत्रस्यवुथावजोत् ॥ १ ॥ सुवर्णीदानभुमीदानग
 यापणीतपस्याजग्यप्रनेकईयादिधर्मगयापनीप्रपुताभयाप
 दि कौनैधर्मगयावुथाहृतसअर्थलेपुत्रचाहिहृतवगाउर्वकुलका
 ब्राह्मिपाहुरुअपुत्रथियापुनपुत्रभयोरनरकदेविउक्तीस्वर्गप्राप्ती
 भयातोहिवातीमकहकुलकुन्दहवत् ॥ पापुर्वमाकस्यवचुबिका
 लीश्कंदुभन्याकीरपीनताभन्याकिदक्षप्रजापतीकीकोरीर
 हेहकताथियाभन्यातेजव्रंतीपतीवताभ्राकनात्वामीकस्यप
 तिषीकाभक्तचाकरीवहुतैगचाररिविबुद्धिनेकनष्टाकृत्या
 लीहहलाईप्रसन्नभैवरमागदिहुननीचुबिलेभंदात्वामी
 हरमागदहीनहेत्वामीमलाइनागपुत्रहजारहवत्भनीकं
 दुमलेमागिइनेहजारनागपुत्रलाईगीतन्याश्चपुत्रवीनागले
 मागीनूरलीलाईवरपाईदियाकताउपायभन्याशीसुव्य
 काप्रतगर्तीमीहहलेभन्याकापुत्रप्राप्तीहोलाभनीभन्या
 रभ्रापुत्रपवननागयारइनेलीशलेथीसुयेकावतगरीरहवा
 वत्सायकादिनमादेगीयभैपेथिकंदुमलेहजारगोताकुल

वाहिनीनाले वनीर कुल वाहिनीर ले कुल कुल लीर
 ह्या व दिहजार वर्ष पुगि कुंदुम ले हजारे नाग पुत्र से प्रवाग
 कालीनाग वाहु की नाग आदि अष्ट कुलीनाग प्रभीती भ
 या को देवि वीनाता मनमा चिंतनाग दे दिदै का हजारे कुल
 दे विपुत्र भया मेराय क कुल दे विपुत्र भया मेराय क कुल दे श्री
 क्या हो भयन भनी तर्मय जाले आ फैले १ कुल को हिरे रि
 रि रनाई तो दे वि उ भोती दुनाई तो दे वि उ चो ली छी न भ भ
 को कल्लो भन्या विकत मु ति हुग वाहु माहा भयंकर स
 रि भया को कुल भीत्र का वाल बले आ मालाई सु सु प
 ग र्ध हे माहा तारी ती मी ले लो भग रि कुल को वि चोर म
 लाइ अर्ध तिग चो न वती मी ती मी दि दी ती त व य र्छती
 की दा ती भया भनी आ जग चो प दि यो आ प पु न्या ती
 मी लाइ दा सि दे श्री उ का स न्या तो वा की र ह्या को कुल
 न को र पुन हजारे वर्ष संस को हल रत ले कुल वात ज भ
 लाउ ते दी न ती मी दा सि दे श्री उ कौ ली भनी आ प उ व दे
 स प नी दी र्नाई तो दे वि उ भोती उ भया को न ल ब ले

हे माहातारीमजां दु मनीवी दामागदा विनता भंक्षे हे पुत्र
 रोरपीता काउ पकार वमो जी मनी दुर्यका भक्त गरिवा
 शाकोत मलाई को दिका हा जांच सभंदा छोटा पेटरी भंक्षे
 हे माहातारी कोरोत मानी च बहु न वल पाउ देन न्या हो
 भन्या दुर्यका रथ सारथी हुं मजा हा वल पाउ देन मनी
 वी दामागदा दुर्यका रथ मा जाई वल पाउ देन मनी
 नाउ प्ररु रथ मा वाहु क सारथी प्रात उथी रथ को दसन
 जहले सवे पावन कहुं ॥ ॥ इती भवीष्य पुराणे अरुणात्र
 म प्रथम ॥ १ ॥ माहापद्यि यकां दिवसा स्वर्गमा ३३ कोती
 देवता वसिमतो गरी हामी देव लोक जला भे कन मनु यनी
 तत अर्थ मनु ब पुनी उ पाय न्या गरी मनी भंदा ब्रह्मा
 थाई जाउ मनी देव लोक गरा ब्रह्मा थाइ पुनि देव लोक
 कीती गर्दन हे पीतां मह हामी देव जला भे कन मनु यनी तवन म
 न्या तदा भीरं जीवर सपाउ पाय व कसनु ह व सभंदा ब्रह्मा आ
 ग्या गर्दन हे देव लोक तत्कारन को उ पाय मेले गरी पु देन श्री
 भगवान् परात्मा ले गरी कन मा च पुण्य पोका यी नी च यगर्नी

ऐश्वर्यवन्माहा हिमवैदेवतागणभेलाभैत्री परमात्माचे उजादा
 मया ॥ वेकुंथपुगित्री परमात्माचे उवीतीगमाहे श्री परमा
 माहामी देव लोक जस्ता भैकन मनु मन्वी क्या अर्थ ले होत
 सर्थ ले मनुन पन्वी उपाय व कसनु हव स मन्पार देव लोका वी
 टिवचन सुनी श्री परमात्मा आग्या गर्धन हे देव लोक हामी ले
 मात्र यो का प्रज्या देन दै ते गता पनी ना हिं क्य अर्थ ले भ
 न्या ती मीर दै ते भई कन फिर त मुद्रमा मंदल गीरि पर्वत ल्या
 इमथन गार केले मनु पदैन मनी मन्पार श्री परमात्मा को
 वचन सुनी देव लोक ले ह स मनी पुन सतोग सिद्धता दै त
 गता हा मा दै त त्रु ह्नु म यो ता पनी श्री परमात्मा ले दिका
 रता ले आग्या ग या का हुन मनी देव गता दा की हे दै ते गता
 श्री परार मात्मा ले ती की हामी नि लि त मुद्र मथन ग या के ले
 न मनु पन्वी पन्वी चिज मील ला मनी आग्या गर्धन मंदा
 हव स मनी दै ते गता पनी देव गता पदिलाई मंदल गीरि प
 र्वत यो जे न ग सा मंदल गिरि कस्ता व र्वत मन्पाल माई ३००
 कोत्त गज २०० कोत्त उच्चो ६०० कोत्त लमाई यस्ता पर्वत

कान गिन मा पधि २ थर ले वरी परी धनी उ खे लना रु दूया
 ग-पारु उ बली यनर २ थर पुरात्मा पर्वत उ बल नन स की म
 न अति व क्तनु ह स मनी मंदा थी परमात्मा ले पर्वत उ बल
 न स की यन अति व क्तनु ह स मनी मंदा थी परमात्मा ले
 पर्वत उ बली दि द्या स्व पर्वत लि २ थर स मु दूमा गया तीर थ
 मा पु गित्व हि पर्वत क धु पा का की ही यामान सा र्वा सु वि
 नाग को दोरी व मा र्वा नाग का मु ष प ही देव ग रा पु क र
 प ही देव ग रा भै थी परमात्मा का वं मो जी म स मु दूमा
 पर्वत हा लि म थन ग या नाग का स ले दै त्प मा या देव लो
 क था मा स्व हि दे वि भ ग वान के उ ब्र ह्मा विं ती ग क न ह
 भ ग वान दे ते मा या देव ग न था का का र्थ पु ज ला भ न्पा
 ज तो द व ल के न भ द्यो थी परमात्मा जु ग ती ग रु ला सं दे
 ह न मान भ नी ब्र ह्मा ला र्वा ला र्वा वि च ग री दै त्प देव रा
 म र्थ ग रा र्वा उ पा य ग री दी नु भ यो र २ थर ता म र्थ पु न म
 थन ग न ला ग्ना म थन ग द्यो ग री दै थी च न्द्र मा उ मा ती भ या
 ज पि उ प दे वी जो उ त वं न भ मा उ हा प धि क स तु भ म

श्रीलक्ष्मीप्राप्तिमन्त्रादुत्थरीशिमगवानलेलीयापा
 लीजातवृक्षउच्चैस्त्रवाचोदाशैरावातहानीकल्पवृक्ष
 उत्पत्तीमन्त्रादुत्थारथोकयेनराजसुन्दलेलीयाका
 लकुतवीषउत्पत्तीमन्त्रोरवीषकाष्वालालोदहनलो
 ज्जोस्वविष्वक्श्रीमाहादेवलेलीयायत्तमुद्रवात्
 काननीजलेअनेगर्जतुप्राप्तीमन्त्रोदेवगणलेयकभक्तथोकलियादे
 त्तगणलेपायेनरुकेरिमथनगर्नलाग्वाअनेकरत्नकोजोतिअनेगकूल
 फूलकारलअनेगओसदकासअग्नीप्राप्तभैरववाकभैअमृतजम्बासो
 हिन्धमृतकमराडलुमालिकजातिहेगउतिभंदाथोकओसदलीधन्वीतरिउत्त
 त्रभयासोदेवैथरलेसदगरिकोहोरीहालीपकनजादादेवगणअधिप
 ज्ज्वाअमृतकाधजालिकनआनन्दसितगयादेवगणमनिपादिमदिजादाभ
 यादेवगणभंदाहेदेवगणतिमिकानआउछौउम्ववत्तअनेगचीजउत्त
 त्रमन्त्रोहामिलाइमकभोरुवनीदिपुनोभनीजवाकदियोरदेवतासेवेनिआ
 त्रामानिकेहिजवाकनदिधीपरमात्माछेउगयादेवलोकआयाकादेशिपरमात्मा
 आग्यागर्हहेदेवलोकहोकाअर्थलेमथनछोडिआहाआयोभनीग्यासाइदा
 देवलोकविनिगर्हहेपरमात्माभधनगर्दाअमृतकाधजप्राप्तीभयाकोहोव
 लजकदगरिदेवगणलेलेगयावाडोभंदाउम्ववत्ताअनेगचीजप्राप्तीइहाहा
 मीलाइअन्निजमनिदिपुनोयोचीजक्यागर्जलेवाडोलाभनिलग्यातसर्थवि
 निगर्नआयाकोहोहेपरमन्त्रउपावनग्याछिलायाघाइसक्याछरभैराभ

गवान् लाउपनी लाज नदी हे देव लोक फीन मान उपाय मंगल
 तीमी आनंद तीत वती रह दिला तादि आकुषोद सज्जानी तुंदरी
 मै मोहन लिग या रदैत्य गणमा पुष्पार दैत्य गणले दैव्यार मोहन
 मै बुल्यार दैत्य का राजा मंड है तुन्दरिका हा वात आयो मै रोखी
 तुनु पर्द मंडा खी मंडा हे दान वराज मै ले भन्या को दिया मती मो
 खी तुं दु मनी रदैत्य का राजा ले दिं दु मनी क तुल सत्य वाचा दिक्का
 मा जो माग मनी मंडा खी ले अमृत का पदामे राहात मा दे उर म
 वा दि युवा उला मनी र अमृत का पद सो पी दीया अमृत का पद
 ली को न देव गण को र दैत्य गण को पंगती वसाई देव गण लाई अ
 मृत वाचा दैत्य गण लाई मद का पदाली वा दि दिया वा दि दिस क्य
 पदि संभ चक्र गदा पद्म लीष दालु दा हा ले देव गण मा पती अ
 मृत था पि मा दा क ता स म्मा मुजो को चन्द्र सुर्य ले दे ~~वी~~ र भगवा
 न् थारु विंती ग या हे पर मे स्वर हा ले पनी अमृत वायो मनी मंडा
 श्री भगवान ले सुद र्म न चक्र वा आरख्य मृत का रा काना रता स म्मा पु
 ज्या को हुना ले ठा द मा का ती दियो र अर्ध स रिर म यो मनी आज्ञा क
 वर्ष वर्ष काल मा नन्द मा सु र्वा या स ग र्द ला खी कारु प गरी अमृ
 त का पद दली या न देव सिता ल डारु गरी पनी फि ए नु दु मनी दैत्य
 स वै र ता व द्या भगवान् स्मो र देव गण पनी ल डारु गर्व ला ज्या दैत्य हा

चार पताल भाग्या वा हा प्रांत देवता गण भुति भै इन्द्र का हात अ
 मृत का पदा विधुती भै स्वर्ग जा दा भया ॥ इती मथन ॥ नाद
 उवाच ॥ ॥ हे अश्वसेन राजा उदीन का बालव को श्राप कंदुम
 र्वीनता २ वस्या का वेला मा कुरा चलाया कंदुम भक्षे हे वीनता
 त मुद्रमथन गदा उ चैशवा घोडा उ म्मती भमा को क्पावर्न को द
 भनी र विनता भक्षे हे कंदुम उ चैशवा घोडा चन्द्रमा जता स मेत
 वर्न द भनी र कंदुम ले घाटा को कान का लोद भनी वे उ मा जी हुदा
 ज ह्वे जीत लो उ स्की क मारी हा रुवा ले हुनु भनी क वुल गरी कन
 उ दीन उ हि र ह्या ग नी मा कंदुम ले आ फ्र पु ज ना ग हरु दा क्पा
 ह पु सो तं मा सानी मा विनता सित वे उ वा जी भया द उ चैशवा घोदा
 का कान २ का लोद गरी धु कारी आ उ न तर म क मारी हुन पला ज मा भ ग
 यो भनी अ ह्योर ना ग हरु ग येन कंदुम ही ताई कन दौ हा हरु लाई नं दी हे ना
 ग पु न हो आज मै ले क मारी भया ती मी भु ति भया दौ ती ज मे ज य राजा का
 तत सु र्य यश मा हु मी न प तो स भनी श्राप दि दा उ राई कन ना ग हरु जाई क
 न उ चैशवा घोडा को कान २ ती र धु कारी आ मा भो ली वे र २ वै नी मे ला भै
 उ चैशवा हे न नी मी त ग या पु गि अ त्वा ज हे र्वी ना ग ले पु का या को का लो
 कान दे व दा मा वी भिता आ स र्ये मानी कंदुम ले वीनता लाई भक्षे सा वो हे द की
 भनी वीनता का वु भै दा सि मार हि ॥ ॥ इती भवी मे पु रा णो दा सि मा व द्धि ती य

ध्याय ॥ २ ॥ माहापदिहजारवर्षपुगिवाकिरह्याकोफुलकुलीगरुद
 त्पतीमैअकासजादामया ॥ अकासपुगिरसवालषकातेजनेदेवलोक
 लाईअग्नीकातेजलेपोल्याजहिदहनलाग्योरदेवलोकसवैअग्नीहामी
 देखिक्याहोरिसायाहामीलेताकेहिवांगारगचोनअग्नीथाहुआहुभनी
 गयादेवलोकआयाकोदेखिकनअग्नीमंदनहेदेवलोकअपूर्वक
 मेरोमाहाआहुनुभयोमाहाकृपाएखनुभयोभनीधुसिमैआसनमा
 वसाहुभलाकुसारीगयादेवलोकमंदनहेअग्निसेजक्यालाहुवथाया
 कोहोहामीलेतपाहुमाथीकोहिनचाहिन्याकुटागचौरहोकीहामी
 रहनसकीयनरातपाहुथाहुआयाकोहुंतसर्थअग्नीतेजघताहुदि
 नुहवसुमंदाअग्नीवीतीगहुनहेदेवगहायोतेजमेरोहोईनमलाई
 पनीसंदहलाग्योरवीचारगदीवीनताकोपुत्रगरुदजन्मोउसेकोतेज
 होवीचारगहुहवसुभनीभन्यारअग्नीकावचनसुनीदेवलोकवीचा
 रगर्नलाग्यारविचारमाहाबोधहरेरपुनदेवलोकगरुदथाहुगमापु
 गिदेवलोकमंदनहेगरुदआमोवचनसुनभनीअह्मगीगर्नलाग्यो
 हेकस्पपपुत्रवीनताजसीसतेवनीकीपुत्रअग्नीवायुइंद्रकुवेरय
 मडिगदारीकसवैकावांथवदयानीधीगुणतमोतमुदपुमानमा
 हापुरुषतीमीजस्ताहोहेगरुदपंदिराजतंमातेजलेहामीलाईआगो
 लेपाल्पाहेपोल्यारयोतेजघताहुदिनुहवसुभनीभनआयाकोहुं
 हामीवीदयाएवमंदागरुदलेनीधयमानीआक्रीमाहाताहि

भाई गया देवलोक आनंद सित आकाश गिहे माजा डाम या वीनतार आ
 का फोरग हृद लाग पुत्र का चा करी माव सिर ह्या यक डिन गरुद भं क
 न हे माहातारी ह्या मिरते ती दा जु भाइ हर्त का अर्थ लेती न का चा करी
 वनी रहनु पयो भंदा वीनता भंकी न हि जो ते रा दा गुले आप ग या कोई
 न नाग पुत्र ले कली कपाती ह्या मीले दा सी हुनु प या को हो हि जो को
 साथ वा चाले आज चा करी ग कै भनी नर गरुद के रि भं क न हे
 माहातारी ह्या मीले दा सि कौ ना तर हले मुक्त ह न्या हो ती न ले मा
 ग्या को वस्तु दिया दा सी मुक्त गरी दी न न की त्वधि हे नु ह क स भ
 योर वीनता नाग पुत्र धाई गई कन तो धी न हे नाग पुत्र हो सुन
 ह्या मी लाई दा सि द्यु ताई दे उती मीले मा ग्या को कुरा ह्या मी दिं दौ
 भनी र नाग पुत्र ह रु भं क न हे दा सि नी ह्या मी मा तो ग रौ भं की सबै
 ३ सितो ग या य को दो र गरुद आ ती वली यो क जु न्कु रा भ न्यो स्व
 कुर पु या उ न्या क ॥ त स अर्थ अ मृत मा गो भनी त ह्या ह थ ह रा
 ई मृत मा ग्या स्व ही कुरा दो रा घे उ भं कि ॥ हे पुत्र अ मृत मा ग्यं
 न ह व स अ मृत मा ग्या क न व ता रू दि नु ह व स म ग्रा ह ल्या उ कु भ
 न्यार वीनता ले अ मृत दे उ रा जा अ उ क भ नी दे व के उ कु भ नी व
 ता यी दि प्र र गरुद वी दा मा ग्यं हे म हा ता रि अ मृत ली न जों कु भो ग
 ला यो क्या षा उ दि नु ह व स र्वी दा प नी व क स नु ह व स भ न्यो र वी दा
 य नी दियो धान लाई भो पुत्र स मु द ती र मा नी षा ड भ न्या को दे द

सविमा जाई कन बाहिरा वाहिक अहू ध्या पूर्ण गरी बाहुजा
 बाहिरा बाहु धेन प्राचीतला ज्ञान भंडा गरुद मंडन ॥ हे मा हातारी
 बाहिरा कला दवलले चिंतु मंडा वीनाता मंडीन बाहिरा नील
 दामुस मा वलाते जले आगोले पोल्या ज हि पोलना तसर्थ बाहिरा
 लात काळे प्राकृतु गनी चिन्हा इ दिया हे पुत्र श्रीसूर्य देवाले तोला
 ईरुपा गरुत गया को कामते रामनने चीताया को कोने कुरापनी
 ताका ले पुगो सुभनी आसिवादी गरुद जे आ फ्री महतारी लाई
 दंदवत गरी वीदा भै अमृत काष वरमा गया बाहा प्रात मा हाता
 टीका आती वेमोर्गी मनी बादि देसु मुख वातो मा पु गि वसी आ फ्री
 पक्षे तोले हाक दानी बादी लोक पवेता का वतास ले गरुद का मुख मा प
 या कामानी स्मथ्य १ बाहिरा परे गरुद का मुख मा परदा हे बाहिरा नी कली
 घोवुन हत्या गदैन भन्यो बाहिरा ले हे गरुद नी बादी मेरा वी व क द व
 पनी नी काली दे उ मंडा बाहिरा किवा हनी मुख वात वा कि फाल्या
 तोते वज्र माना बादी लोक ३००० हजार बाई आकास उ दी जा डो
 भयो ॥ आकास मा तपेवन पुगी भू ॥ बाहिरा तपस्या गया को देखि
 मेरो वावु पनी जात हो ल भनी वीचार गर गरी कस्य पक्षु विधाई गमे
 पु गि आ फ्री पीता लाई दंदवत गरी चरता मोपयो कस्य परी वी भं

भेदन् ॥ हे पुत्र गह्य तरे महतरी दाहू कुलल आनंद के की
 दंडन नत का हाजा दस्त क्या कामलाई आई स ननी स्वय्यार हेपीता म
 हतारी दाज्यु आनंद दन् हामी दाही कु मु कती हुन अमृत लीन जा
 धुमलाई भो कला गिर हे दू के हि बान दिनु ह वै स नन्योर के स्य
 प मृषि भेदन् हे पुत्र तरे भोग लाज्यो ता उत्तर सरवर १६४०० को
 जीर्ण ते स पोषरी मा गज के द पना उ ग या को क धु रा गोता २ पूर्व वी
 रोधी दन् कला क धु रा भ या सा पि १०६० को तका २ का पी ठी गु
 ईसा ४० को सत्य हि क धु वाली मा रू जा भ न्यार अमृत ली आ या
 स भनी वी दा दिया गरु द गह वी दा भै वा वु को आजा व मो
 जीम सरो वरे मा जाई हे दा २ क धु रा द व्या २ प जाले प की ल्या
 यो का हावती बां भनी हे दा बंद वी र्धन थी यो उ वृक्ष को पती
 को हा गो ४०० को तको हे द भनी ई से हा गो मा व सि बां ला भनी व
 ल गादा हमा न के भ ग योर आ का त दे वि न स्यो त पो व न मि व न
 ल म्यो त्व हि हा गो मा नु हा उ भो क पाल उ धो ग रिं दी त प त्या ग
 या का पी वि ६००० हजार थि या ॥ तो हि मृषि पनी ड रा ई के हि उ
 नायन पाई हा गो दो ड न न त की म त्या को क स्य परी विले दे व्या
 र हे पुत्र ड रा उ न प दे न भनी का वि ग ता के उ क त्य प न मृषि वी ती

गङ्गे नहे हि धी गता योग रुदत पाई हरका आसि वा दले भ
 माको रक्षा गनु ब्रह्म मनी मंदा ॥ ६००० ॥ नमि गता तपो व
 नका नाभि हरुने गरुनाई आसि वा ददि हे माल जाई
 तप गनु गयो के री गरु दलाई कल्प पत्र सी मं दन हे पु
 न नमि गता सवै गयो यो हां गो मंध मा द प वीत मा जाई व ताई
 दे भन्या र गरु दले ह वत म नि प वीत का थी ग गा मा जा
 ई व ताई दियो त्यहि हा गोलो सी ची कन अरु वृक्षे भे रै गी
 या थी मा प नी स द भ यो र उ स म य मा ग र्भ वा स न या
 को जो थी यो तु ह्यो यती स की ग ज क द प वा रू गरु द
 अमृत का उ प दे स ग यो ॥ इती भवी ध्य पुराणे गज
 क द पी य ती ती य ध्या य ॥ ३ ॥ नारद उवाच ॥ फेरी
 नारद ले अ स्व तेन राजा लाई कहं दन ॥ तव ग रु द व
 ग सीत अ का स जो दा दे व लोक आनंद सित व त्या को स
 म य मा स त्र कु दाई र ष्या का आफु आ कै ल द्या प स्ता उ
 पा धी दे वि क न इन्द्र ले हा मा दे व धर मा क्वा उ पा धी हुन
 आ पो भ नी वृ ह स्प ती क कि स्य ध्या हे गुरु वृ ह स्प ती क्वा
 हुन आ पो हा मा स त्र कु दाई र ष्या मा आफु आ कै ले यो

भनी तो प्यार वृहस्पती लेवी मारण ही भं दन हे ई
 न्दवीनता को छोरा गरुड आया को हो क्या अर्थ ले आ
 या को हो भन्या आपुटा सिधुता वनानी मीत अमृत हर
 पा मर्म आया को होत स अर्थ आ क्रास त्रिअ त्रि व
 नाई लडाइ का सराजामत मारण रीराख अमृत भन्या
 नली जावैन भनी आग्या ग-पार वृहस्पती का वचन सुनी
 रुद्र लडाइ का सराजामत मारण रीराख अमृत राखा
 काथा उमारखा रीराखा का मोवनना मरखा री
 हरु लाई पनी संभारण रीराखती मिहरु पनीत मार
 भैरु माहावलवंत पं दि आरु न्या क गौ डाल फारो
 की हांनु भनी अहाईत मार भैरु का वेला माग रुद्र
 लाई को नै कुरा पनी नला और वत हाती चढि देव गरा
 लीई अनेक वान छोदन लाज्या गरुड लाई को नै कुरा पनी
 न लाज्या देव गरा लाई जीती अमृत राखा का ठाउ माग
 रुद्र जाई हे दा अजी प्रज्वाला ले गरी आगा का बाबा भी
 न राखा को दे बि समुद्र मागई समुद्र का जल ले पे त भरी ली आ
 ई अजी बाबा मा जल पोष दा अजी म-योर भी वप सी हे दा

यदाकावरीपरीशनागमुषवातलोचनवातअग्नीप्रज्वाला
 लेगरीररह्याकोदेविधुलोलभागकामुषमाआषामा
 करिदिदनागभाषायतीसकिभोवनादिरखवारीमारीक
 नघडालीआपुल्लेवनीउसैठार्त्तमावसीषायेषाह्वे
 वलवंतभैअमृतकाचडालीजायासाइन्दुकामाहाकोपन
 डीकनआफ्राहातकोवत्तहारगयास्वदषिकनगरुमंछ
 नहेइन्दुतमावजप्रहारगयाकोव्यर्थागनुदैनतसअर्थ
 मेरापोषधेरजावसुभनीपोषसाथापीदीयोएलागी
 पोषरुचोजाहापोषरुचाकोथीयोउत्पोषकाथेप्रो
 सुवर्णपर्वतभयोसोहिपर्वतयेविह्वेओह्वेमान्नी
 कनहेगरुदतीमीतीतमीतलाउकुभनीइन्दुलेमंदागरु
 मंछनहेइन्दुतीमीलेमीतलाउनाकार्यपोअमृतवचाउ
 नानीमीतहोयोअमृतघोइन्पाकेनक्याअर्थलेलीनआया
 थाभभ्याहामीलार्त्तनागहृदलेइतिगरीरव्याघनततर्ह
 लेलीनआयाथा॥योअमृतलीजाकुभन्या॥हेगरुदतीमी
 वलवान्कोअमृतअहलार्त्तनदेतीवदिहामीलार्त्तदावा
 गलीलीमीजोमागदहौमंदिहुभनीपुसिभैकुबुलगया

इन्द्रकावचन सुनी गरुद सु सिमै हें देव राज इन्द्रमा
 ग्या को दिनु भया मागदु कुमनी भंदा इन्द्रले दिना भन्या
 र पोनाग सबै मेरा भक्षो हरु भनी माग्यो रत थास्तु भ
 नी दिया इन्द्रले कैरि भंछना हे गरुद पोअ मृत दिजा
 उं भनी आग्या भयो गरुद नें हें देव राज इन्द्र ॥ अले
 अमृत न मागनु हनेस् ॥ मेरा सत्य गेर हें कुमना हा च
 त जां लार अमृत नाग हरु लाई गादी राखि दा सि छ
 त्या उछु उले वसत मात पाई ले पाउनु होला भनी नी
 दा भै छर फी टि आ. य. ॥ आउदा र सा मा थीना रा यन
 भो पार ॥ हे गरुद ती घा पर क न ले गरी कन अमृत त
 मेत हरी वा द्यो म सु सिम जा क्या मा ग्यो माग भनी । थीना
 त पालो आग्या ग्या ॥ गरुद नी तीग छ हें भगवान् म
 उं पर क रूणा भयोत । त पाई का भोज दे वि पनी अम्वर
 व क्तनु हन स भनी माग्यो र । भगवान् लो तथास्तु भनी वर
 दिया ॥ पुन गरुद भंछनु हे भगवान् त पाई ले वर व सिनु
 न मो म सु सिना म केउ पनी भाग म दिनु भन्यो र भगवा

वानले हे गरुद वाचा सते गरम माग धु मनी सायग
 राई हे गरुद तीमी मेरो वाहन हुनु पद मनी आग्या
 ग-घार गरुद ले हव स मनी ॥ बाहा दे विग रुद नाराय
 ता का वाहान मया का हो श्री नारायण धे उ वीदा भै गरु
 द अमृतली आ पूरा चरग था. चरपुगी वीनता लाई द
 डवात गरी अमृत सोपी दीया र वीनता ले अमृत लगी
 नाग हरु का अगा दि रा विदी इ नर नाग हरु खु सि भै
 वीनता लाई दा ति दु दी गरी दिमा. अमृत का च दा व
 ही कुस का पुता मा रा विस पे त व लल गाई नाग हरु
 रुनु हा उ नु ग था ॥ त्व हि व घत मा इन्द्र वा रु त्ना ता ह व
 भै आरु नोरी ले ग था ॥ नाग हरु त्ना न गरी फेरी आरु
 है दा ॥ अमृत का च दा न दे वि ॥ को ना पा पी ले नोरी ले
 गे छ मो कु स मा ला ग्या को अमृत नात न्या हो मनी स
 वै नाग हरु ले ल था रो गरी चात दा कु स ले का. जिजी
 वा दुइ दुई मया इती मनी अपु ताने अमृत हर रा न
 उर्थ ध्या य ॥ ४ ॥ फेरि नारद ले अश्व से नरा जा लाई कहं
 कन उ दिन कं दु म ले घो दा का कान् थु कारी का लो ग न जा

उभंडानाग हरून जांदा ॥ आ पग चाको नाग हरु सवे वटो
 लीमटो ग र्कन हे भाई हो श्राप मा हातारी का ते ससत सूर्य य
 जमा हो मी गुं पन्या कुन पुवं च ले छुत ला भनी मतो हु दो ॥ के
 हिना ग ले यश गन्या वाहिरा लाई दसी मा रै भन्या के हिना
 गले ॥ राजै मा भन्या के हिना गले यश का सराजाम राध्या
 का भंडार मा मल मुत वृष्टि गरी दिउर आपै मर्न न भनी
 पलाना ना वचन बोल्दा वा सुकी नाग राजा भं कन ॥ हे ना
 ग लोक यो क्या नाना पाप वचन बोल्द को सी दसी व भनी स
 वैले वा सि ॥ हा मो पाप का टन स क्या पो हा मो कुल पनी उ
 धार हो ला ॥ हा मी लाई पनी सा वा सि दिन न भनी भंडा
 मा ॥ औ रो य जना ग भं क हे ना ग राज हा मी हरु लाई
 मा हातारी ले श्राप दिदा देव ग रा मा व ह्मा ले तथा लु भ
 नी वचन जा दा ॥ देव ग रा भे हे व ह्मा ती मी ले रुन्का श्राप
 मा क्या भर्थ ले तथा लु भनी प्राधीत ली यो भंडा व ह्मा
 ले देव ग रा लाई भं कन नाग हरु ले धे रै लाई रु सि मा
 र्कन भनी तथा लु भन्या को हो भनी भंडा देव ग रा ले
 व ह्मा थाई वी ती ग या ॥ हे पीतां महा ती न लाई श्राप हु दा

तथा लुभन्पाका कुरुमा प्राचीतलाप्यो अवतीन कारु
 धार हुन्पा उपाय के हि द की भन्या र व ह्मा ने आशा
 ग या हे दे व ग रा ती न कारु धार वा लु की ना ग की ने
 ही जल कारी ना ग क न्या जल का लू मृ वि ला ई वी
 वा ह गरी दि उ स्ते श्री सूर्य का व्रत ग या सीतान हुन्या द
 स्व हि संतान ले यो पा प मो चन ग न्या द भनी आशा
 ग या को हो भं डा ना ग ह रु ले हे औ रो पत्र को कुरु मा
 नो हो भनी वि हि मा त थ ह रा ई वै न्ही वी वा ह गरी दि न
 ला ई व र भोजन ग या ॥ इ ती श्री भ वी से पुरा णो ना ग मंत्र
 नाम त मा त्र पंच मो ध्या य ॥ ५ ॥ ना र द ले अ त्व से न
 राजा क न पेरि क हं द न त व ज ल का लू मृ वि क स्ता ठी
 या भ न्या त प स्या ले जी त्या को प स्ता मृ वि अ ने का त प व न
 जा र्ज त प स्या ग र्था य का दि न मा ॥ अ कौ ठा उ मा जा र्ज
 त प ग र्ज जां भ नी जा रा मा ना ता मा न की गुं ड र हे द ते स न की
 कुं ड का स्की की रा मा पि त्र लो क कुरु का नु त प की क न बु ठो
 मी टो गरी ख स ना का त या र भै र व्या का दे वि जल का रु भ

द हे कुसका पुट समाती रह्या हरु तीमी को हौ तीमी
 हरु ले समाया को कुसका पुटो मुसाले कातन लागी रहे
 कुं ॥ अलीक वे समातीमी हरु न कंक तदमा प दौ त सार्थ
 तीमी हरु ले क्या पाप ग-या का दौ ॥ मथारु कुटुर मेरे
 धर्म तप जो क नारखं तदमा प बंद ले हुं कतापनी आ
 धा बंद ले हु कतापनी सबै दिहुं कतापनी दिहुं ननी
 मंदापतु लोक ले भं दन ॥ हे माहा पुरुष क्या अर्थ ले स
 मीन क मापन लाग्या का भन्या ॥ हामा संतान सबै कय
 भया १ जलका लुकर ३ धमन भौत त पस्या माग्या को क
 उ स ले वीवा हजर् इछा ग दैन उ सका सीतान न भौ जल
 का लु मया पधि हामी ले अव स्यन क मा पनु प र्च त मात
 पग-या को दिहामी उं चार हु दैनौ त मा जती जपत प हामी
 २ ॥ ए रग-या को क त त अर्थ तमा धर्म भया देखि जलका
 ल ठारु जारु तमा वावु वाज्या हरु यस्त दवल ले नर क मा पन
 तयार भौ रह्या दन तै ले वीवा हगरी पुत्र का दसन ग-या ॥
 त्यो दी नत नन भनी जलका लु लाई भनी देर भन्या पिलोका को भाग्या सु
 नी ॥ जलका लु ले हे पीतामह जलका लु मै हु तीमी लाई यस्तो

अकार्थ भयो तम पीवी हग दुर्गर्नाता ग दुर्मेरनाउज सौग
 या कि कंन्या न पाई गन्गी कै न मनी स्वकुसकोउ पदे सजा डोभ
 यो जादा जादै माहा अघोर वन मापुषी वीधा मगरी रह दामा
 नाग हरु पनी वर यो जनानी मीती आया का थी यो ॥ वनांतर
 मा भेट भै कन सो व्याहेरी वीती मीको हो भंदा जलाका लु
 भं कना गरा मजलाका लु हुं वीवाह गर्नी नी मीप्र मेरना
 उज सौग या की कंन्या भोजन आयां भं दाना ग हरु भं धर
 ॥ हे जलाका लु हामी हरु ले पनी ती मीलाई यो जन आया
 का हुं हामा वही नी जलाकारी छ ती मीलाई नी वय दि कुं भनी
 वागदत्त दिया दिन हेरी लगन जुलाई अने क सुर्व रारा ना
 दि दाई जो दि वी वाह गरी दिया जुलाई लाई वैनी घर वेना
 ई वसा या रह दान स्या कंन्या लाई रीतु भै कन सुषि लेरी तुया
 न दि कंन्या लाई यमा मय मयो कंन्या जलाकारी ले श्री
 सूर्य को बात गकी रहि छं यका दिन मा कंन्या का काष सि
 हान गरी नृषि तुया का थी यार्थी सूर्य मन्था भ ता हुन लागो
 मेरो धर्म बात जाला नृषी भ यन नृउ ठा उमन्था तिसा उनर
 तर सीता को वर्धी या धं धर्म व्यर्थो गर्नु छैन वर्धी या छैन भ

नीमनमापीतनाग-योर नृषिभाई उठाई नृषिउमी
 रीसाया हेकन्याम भंडा थुलो को अरुने रि को ही दु
 की। नेर सात चैन भनी भंडा कन्या वीं तीग जे हे स्वा
 मी जाज भी सु र्य का वत द पुजागर्जन बाई अस्त हून जा
 ला धर्म र होई न भनी त पाई लाई लाई उथाया को हो
 नी जजला का लु वन री साई कन हे कन्या मे तोनी द्वाग
 चा पछित तीत अत्पर ह दीन नृ मिग या भनी ते रादा
 जु ह द तीत भनी दे भनी कन नृ मि घर दे धिनी क्का के
 न्या तो र कन हे स्वा मि मला रू क खरी को दिजानु त हा मा संता
 न ले दा जु ह द उ दार होला भनी आ भाग या को हो अ व क स्व
 गरी उ दार हूं के भंडा रा जु ह द ला रू क सो गरी मुख हे न जां
 भनी स्वा मि था रू वीं तीग रि न र मु नी नृ वि भं हु न हे स्त्री
 ते रो ग भा ध य भ यो मे रो पी व वं त प नी ते रो पी व वं
 स प नी उ दार ग लार्त ला रू पु व हु ने छ ते स वाल व
 को ना उ आ वि क भ यो भ नी ज न का लु नृ वि पु न
 त प स्वा ग र्ज जा रा भ य क न्या मा हा दु ख सि त आ
 क्रा दा जु वा सु वा ल की ना ग था रू जा रू हे दा जु त वा
 जु वा ति य सा वें हो ग मा री सा रू ग या भ नी स वें व्य
 हा क हि र वा लु की ना गं आ क्री वें की वें ध ग द न

है जे कोरी। हा साध भाग हो यो सु बिले हा मी लाई
 चलो देव का गुरु अ की ले ग दें न भावी ले ले व्या को
 सा हा ता री का भाय हो क्या गरी मे ती मे ति य ला म
 नी ल ज्वा ले वा सु की ना ग वा ही र गो स्क न व नी स
 के न न दा गु का व व न सु नी हे दो यु त मा गु ना नी
 ले जा व व मा मै ले स्व चार ते रा गु भा य य म
 या को द्यो पा ल व ज न्म ला ते स वाल व को ना
 उ आ धि क भ यो ते स वाल व ले मे रो की व व स
 व नी ते री मा जी व स व नी उ द्धार ग ला म नी ग
 या म नी ग र सु सि मे व ही को स भा र रा धि आ
 न द सी त र ह्या ता हा व हि मे व हा वु गि ज ला का
 री क न्या ला ई श्री सु र्य का व त का प्र भा व ले पु व
 आ धी क वाल व भ यो: यो आ धी क सु क प क्षे
 का न न्द मां ज हि दिन श्व द दो ज न्म ज य रा जा ले
 आ क्क वा वु प री दी त रा जा त क्ष क ना ज ले द सी मा
 या को स म आ र ता सु र्य य रा ग न आ रं भ ग नी
 नी मी त वा ल ग द की ज रा आ रं भ ग या व हा
 ग ले म वं ग री स ह र ना ग ला इ मा हा स क म

गायको च मनी मंद आ प्री वै ही था इजा इ है
 वै ही ती त मा पु व ले हा मी ला इ उ डा ए ग र्वा वै
 ला आ मो हा मी ला इ मा हा त के स ग वा को च
 मनी मंद आ प्री वै ही जल का लु आ प्री पु
 व ज को लु आ प्री क ला इ अ हा इ न त र वु ठि आ वै लौ त
 रा मा मा ला इ ज न म ज य रा जा का स त लु य य रा मा हु मी
 पु प रो म मनी आ प्री दि या को थी इ न यो प्र वं ध को
 नै प्र वं ध ग री हु मी नु न य न्यो ग रि छु ता इ आ मनी
 मनी इ ह व र मनी आ ली क आ प्री मा हा रा गी का
 व च न लु वी ज न म ज य रा जा का जं स मां जा इ क न अ न
 क मी ग ल वा क्य पु ड द मा ज न म ज य रा मा पु वि म
 क्का मा उ त् मा ग म न्यार आ ली क मा उ द हे मा हा रा ज
 स तं ग र म मा ग हु मनी स त य ग रा इ यो य स य सै य री
 छु ही ग री ना ग हु मी नु न य न्यो ग री स क नु ह व र म
 नी मा यो र उ सै य री य स प्र ती घा ग रा य य सों वी छ
 ग री आ प्री मा मा हा रु व चा इ व र की रि जो म या को वै
 ती त आ प्री मा मा म हा रा रि ह र ला इ क ल ए पु वि

२५
कनकाग हल्ले आ फा मानी ज आ सी क लाई कु
मा गे हो माग मनी मंदा आ घी कले मेरो नाउ ग न्यो मा
नी स कनकाग हल्ले न रु सु मनी स च मी दी न
ह व सु मनी मा ग्यो रु बा हु को पु भी ती ना ज ह हल्ले
तथा सु न र दि पु र्व के सु ख आ नं द सीत र ह्या
ली क का पु भा व ले जल को लु का त प पु र्ण भ यो र पी
वंत कु स का पु टो स मा र ह न्या ह रु उ दार भै स्वर्ग
प्राप्ती भया पुत्र भयों को य सो जी ज कु म न्या स का
है देन ॥ ॥ इ ती थी भवी ध्य पु रा गो आ सी क ज न्म य छ
म ध्या य ॥ ६ ॥ कै ती ना र द ने के न हे अ म्ब ले न राज पु
त्र ह न्या कु पा य मे ले क हिस क या स्व पु र्व ध सीत थी सु
यो का व्रत ग न्नु अ थी ती मी ला रु हो री हो ला हो री का
पु भा व ले प की हो रु प नी हो ला ॥ थी सु यो का पु भा
व ले वी ना ता २ पु त्र भै कु ले ता या ॥ जल को लु का पु त्र
आ ती भै पी तु र्व स मा तृ न स ता या ले व पु त्र न भे या
को नै भ म को फल है न म हे राज न पु त्र रु व दे स दि ता
म ला रु वी दा व स न्नु ह व सु मनी नी दा मा ग्यार ॥ राजा ले
प ने क आ म र ले मु नी का पु जा गरी क श्री गाना दि नो

३२
[दलाउ वीदा दिया ॥ नारद वीदा भे कनया फा गृह जो
दा भे सा ॥ रा रा ना द का अ ति व मो जी म श्री सु र्य का
वत गरी आ न द सीत व सा भ या र ह डा व त्या रा नी ला
इ ग भा य य भ यो मे न्हा पु ग्री पु नी ज न्म भ यो क तो
पु नी भ न्या ॥ ल क्ष रा ले गु गत र म्या की दे व ता का ज ता
ह ति लु क ल प क्षे का च न्द्र मा पु नी दी न व ड दो
भ यो न् ॥ रा जा ले पु न्द्र ल्य ग रि नी दान ग री रा ध्या
॥ ॥ ॥ ॥ व र्त्त पु गि वी वी ह ला र्क त ले वा त मा ज न आ उ
दे न न् रा जा भे द न् ॥ हे म वी हो पु नी व धी न् ग्रा ज
त क क से वा त मा ज न आ या को के न त स अ र्थ र थ
मा न्द्र मा री रा र वी ला बाल क्क [स मे न्द्र ग री दे स मा
जा इ न र यो ज न लार् मा उ हे दो हो री की न ज र मा
जु न् चा हि कु मा र थ ह र ला त्रि हि सि त वी वा ह ग री दी
उ ल जा उ भ नी स रा जा म त या र ग री ग र्न् ना या स
ती धा इ उ त ला बाल क्क [म वी स त सा वी वी रा ज कु मा
री वा यो ज नानी मी त्र दे ता त र मा गा दी भु उ न् ॥ दे स
दे साने र मा मु गी कु मा [ह र हे र्द को न्द्र कु मा [

कुमारी का मन मान डह री फेरियो जी ठ ह र डुय
र आ नीने ॥ कला व ड ह र डुय न भन्या य क हिमाल
य समीप स र डुय का अधी यती है म चन्द्र रजा
धी या स्व हि रजा ले लु व री पुरन गरु का सु डुय
रजा व री प्रती कर ली या को र ह डे डे उ म्मे न्हा
मा लु डुय म अंधा भ या कर री स ले कर दी यन
द ॥ हे म चन्द्र रजा का लाफ र ल डुय नी च दि ह
डुय रजा सित ल डुय जि ग री जी ती अंधा लु
डुय र डुय की रानी री य ला डुय सत्य वं तो ला
डुय व री पुर दे यि नी का ली दि या को र ह
डुय नै व ना र र मा मा हा वी ला य ग री र ह्या का
र ह्या ह र स्व हि सत्य वं न व री या जा सा वी जी
ले आ क्रा वा बु अ स्व से ने ला डुय न ही न ॥ छोरी
का व च न सु नी रं जी ले मन मा स्व वी पु जी ले तो
रि आ डुय ॥ अ व वी ह म रा डुय की ह्य व्या हे ना र ड
मु नी पु जी ले भ न्या लु डुय म का धो रा सत्य वी
की आ डुय रजा व ना त र मा र ही र ह्या ह न

तं व को स्वगन्या पुन को लगन जु के को जु दै न गनी
 स्वधमार नार दल लगया ठ ह या हु अने कनी
 घा गरी हे हिराजा था हु नी नी ज के व ॥ ह मा
 हारा जल गनु के ॥ जु के ता पनी साय वंत का
 आयु दो व ब्र दीन मा ज के व ब्र दीन मा व का
 पुन स क्या प दि आ फ्र क लता न्या राजनी मी
 ती सीत अनी को के हि न लाग्या गरी रह न्य हे
 मा हारा जत या मी जानु ह व स भं सु को ही लाहु
 उ की स्व ध्या हे पु नी ती मी ले व ही सा या की
 साय वंत का व ब्र दीन मा ज का यु दो वा की
 र ह्या को र हे कती मी ले अरु व न्या हो न डो
 सा वी जी भ की न हे पी ता ॥ सी भ न्या की कती
 भ न्या प क फे रा मन मा ची त नो गरी पुरुष
 व न्या प ही फे री अ र व र न्या मो ज्य के न ॥ आ
 प्रा ता य नी हे न्या म पी ता ता ता त्रु हु न्या ॥ त स थो अ
 ल्य आ यु दो भ य प नि क लो म क भ यो प नि मे रो यु ह पति
 नै ह न भ नि भ न्य ॥ लया का चित क ह वि द्य क री ॥ सा रा
 जाम त या ग री ॥ अनिक ल त री सित व न मा ज री

सुसु सुम सुजायिया बलिपुज्याः ॥ वस्करकाद जे देस चं
 राजा आया भाने इदि दोषि पानि काग्पा सा रावे विअ
 तेन जाते मंत्री सुपदा इ मरु राई ल्याया सुसु सुम सुजायिया
 ॥ नारा पात्या मावसी कुलानलि ॥ देस सुसु सुजायिया
 श्री का को एलाइ मोर कोरि दिं सुभनी अ भसेन ले भंदा सुसु सुम
 दन दे अ भसेन राजा हामी ले को बाल का दिन कोटनु काल पर्व तुलन वास र
 हाका एस वय त मा पाती का छोरी हामी लाइ सो हा डे न राज्य अ काल ले लीया
 माफ ह सुभनी भन्या अ भसेन भंदा दे सुसु सुम राज मेरी छोरी पती प्रता दे ॥ त
 पाती का छोरी लाइ वया की द अर पु र व भन बो दैन भंदा सुसु सुम ले ह
 प्रस भनी जत कु ए डल वसाइ कोरि को वी वा ह गरी दया ॥ छोरी सावीत्री
 सत्य वंत लाइ पीर अ भसेन आ फरा एज के रिजा या भया सावीत्री आन फरा
 सो पीता माता पु र व का से वा गरी हरी नार द ले सुसु सुम दो न भन्या को तेरा स्वामी
 को आमुद बिर्दीन मा वै द भन्या देखि बछे दीन न गती राखीन ॥ श्रीसु र्य का
 प्रत एक चीत गरी रु द्य भया आन फरा स्वामी सत्य वंत का आमुद पुगी ड सदी
 न सी का राजां दु भनी सत्य वंत ले आमा बावु स्वा हरी पाइ वी पा हु पा आमा बा
 पु ले वी पा दीया स्वा हरी ले आ जता दीन पु गो स्वा मी नी भय म न्या दैन भनी
 दी दीयन आ फरा पनी सत्य वंत का साध मा वन मा जा दि भंदा र वन मा पुगी व
 कल्प वृक्ष का आ आमा सावीत्री राखी आ फरा सि का गुन गया सी का रा ग पा
 जे दे क पाल दुखे ए आन फरा सावीत्री पाइ जाइ हे स्त्री मे रै क पाल वृक्ष ते दे को

भनी ऐकेही न तेरिका स मा सुंद भनी साहि का सुमी हा न गरी सुती न
 हा ॥ कायत मारा ज कुमार होये वा भया भ ~~म~~ कही न प दी क
 ल वरा मिहा भयं कार्य म डंड पा स कली इक न द भाइ क न सावीरी
 लाइ भन्या हेसात्री तेरा स्यामी तरुं दे न आ जे दे वि द खो तेरा काव
 दे स दे वि को डे दे हा मी य म डुत हो हा मी ले ले जौं दु भंदा सावीरी
 भंदा ते दे य म मेरा प्राण दे वि अख स्यामी ती मी ले ले जौं ड वर मार
 बुठा बुठी छत्र अंधो म छुखी जाते मेरा स्यामी क न द्यो की जानु
 हव सु भनी हात अंजली का जिय म थाली ती गारि सुनी य म
 डुत भंदा हेसात्री दे न पुगी भगवान् का हुकुं म आया पदी
 क लौ गारि पचा डु छत व को डी दे डती मी सप्त धारी दो हा मी
 ले को पा ती मी आ प ग रु ला भनी भंदा सावीरी ले को पी ये
 नर सप्त वंत का पु पी म स माई पा स ले वा टि पय न पुरु ज जो
 थी यो ले पा सावीरी ले आ नर का स को पुरु व सरि र व ही
 को पी य म का सा थ मा जा पी भइ न अने क प्रकार प्रार्थ भगारी जा पा
 मा ज म डुत भंदा हेसात्री ती मी पती बुता हा मी दे वि स म स ले
 क दरा ड द र ती मी दि वि हा मी द ला ग द र ती मी द र फ की जो ड त मे
 त मे स्यामी वा ही क अर जो मा ग द मा ग दी दु भनी भंदा सावीरी मं
 को र हे प म म मे धारि वि ता भंदा छर आ वाले प व न्या

गरी करपा न देड मनीर की पापुत सावीत्री यमका पक्षि २ जादि
 भइर करि जम पद रे हे पती वता तमा पुखवाही कर जो मागि के मागती नी
 कीरी जाड भयार सावीत्री भंछर हे पम मे रापीता मधसे रका पुत्र दे
 नर सात पुत्र हुवत भनी मागी नर निद्या करि पक्षि २ गड नर जे
 मइत भंछर हे सावीत्री तीसरी न आड कर कीर की स्वर्ग जाड हामी
 पुचाइ दिछो न नी भयार सावीत्री करि भकी न मेये न मेरा स्वामी
 पाहिक मफि न कर स्वर्ग पनी जा नो दे न ॥ भनी यम दुत थ
 कीत नानी यम पुरी यम पुर यम राजा का काडि ले गि पुन्या या
 को दे विजम राजा भंछर हे प ३ उचवांत ल्याड नु भया को स
 री विवे सि स्मित पायो कहे भ ॥ ल्यायो भंया यम लेरा जाथा
 था इवी ती गयो कीरे न कुता मर ॥ भयार आड भंया भय देवि पर
 ला पोर के हेग नु सको ये न पादि ॥ आड भंयार यम राजा भंछर ॥
 हे सावीत्री तीसरी कमान भायो दीन पु मा पक्षि क ले ले वाच पुछे न तमा
 पुत्र ववाही कर जो माग के मागती नी कीरी जाड भयार सावीत्री भंछ
 र ॥ हे जम राज मेरा जम हेम यद्र लेली या को द्र या हा वात फि या पक्षी
 ५२ राज मा वल पाड भनीर वर दीया करि भंया पिरी नर करि जम राज भं
 छर हे सावीत्री तिद्या सामि वाहिक अरु माग म दी दुति मी धर जाड भया
 र सावीत्री भंछर हेम हरा जमरा स्वामी वाही कर माग पु स पगारि पानु

हवस्र भनी सप गारु है न हार ज म र सौ प्रती प्रतार ही जं व पुत्र हव
 स्र भनी माग छ भनी रय म ॥ राजा आ थन र्ज म नी को रु ता फी
 एड नु न स की य सौ वेला ना अंका स वानी गारि श्री सु र्य ले भा झा ग्या
 हम म मरा भ काले य क भया की पती व्रता छ ते स का स्वा मी कि
 राइ प ड आ ज ड प्रात ४०० वर आ य दी प नी दे ड भनी आ झा ग च
 को सु नी आ यु प ४०० स ये व स स म त स प वं त की राइ पी य सा वी नी
 सु सी भौ ग ई आ प्र सा मी व ने प वि ये ती सु भा र ध गारि व च ई चो २
 ज ना जा प भया वो स स प वं त ले खि भाइ से ध्या हे ही न सु लो को
 भी या का ला का ला २ पु र स आ य था क्या का र न ले भा या भ नी न्यार
 सा वी नी भे दे हे स्वा मी य सौ नी द्रा सु बु लाई हव स्र त पा नी क पा ल दु व्वा
 भ नी स का ला सा हु न हुं थो का ला का ला य म आ ड क न त पा नी का प व
 ल ले गया स प नी यो दे २ लागी जा दा मा वा ये मा य म ले क्या मा गे दे स्र भ नी
 भ म्मा र त पा ड का वा का भं धा भ या को प नी दु ता पा ॥ मे रा पी ता का सा त पु
 त्र हव स्र भ नी मा प्पा र दिय आ हा वा ट प नी य म पु र सा पु रि ज म आ ल ले
 दे का र स ध्या हे सा वी नी त क न डाई स ते रा स्वा मी भ न्ना वो वे न स्र भ
 हव स्र मा गे दे स्र ना ग भ न्ना स प रा हि जं व पु त्र हव स्र हा मी लाई दे स्र वा ट दु
 य या दे स प नी आ हा वा त जी नी मा क म पु पा ड या वे क क्कु हवो स्र भं दी
 दी न से के न र श्री सु र्य ले क का स वानी गारि ज स लाई सु ना यार से ही व मो जी म

तपाइका आर्युपा ४०० वर्षसोत सवैरदिया सोही वलीकन तपाइका जी
पडद्वारगारिकन ल्याया को हो भनी भन्याको कुरा सुनी सत्यवंत कुसी भे
आन्यासीली धर भाई आन्यापीता पाताका दसन गति वर्या अंधावा बुले
को वा ले दो विसुलि भया कावेला साथीया लुद्ध मराजा सोद्र छन हे पुत्र स
म व्रत वनमा कसो भयो व्यानयती वीलं वग्यौ भया सत्यवंत वीती छन हे पोता
तपाइकी बुहारि भाई सोधनु हवस् मकेहि जां दिन तथी भया वो हारि थौ
भया सावीत्री ले वनमा भया को कुरा सत्यवंत लाइक हला को कुरा वृतांत सो
नीता लाइ करि आनंद सीत रह्या थका दिन देखि गेल लाइ गयार सुद्ध सपचा स
त्य वती गनी स हगानि नी भइर सत्यवंत राज कुमार ले न चंद्रा ना लाइ जीती
आनंद सीत राजका प्रजार धारि नीती न्यायगारि सत्यवंत राज सावीत्री भे
आनंद सीत रह्या सावीत्री लाइ पंच पुत्र भया सावीत्री का प्र सापले सा
पुत्र अंध सेन राजा लाइ वनी भयो हेन हार राज पुकी र श्री भूष का प्र
भाव ले यसो भोग्या को कुरा पुक्क पथक गारि सुनाया मवै कुं थ जां छु
भनी भगवान् वीपा भया पुदि स्तिरा जाले श्री सुम को व्रत गारि आनंद सीत
रह्या ॥ ॥ इती श्री भवी को व्रत ले अंध सेन प्रवस मा वं सयत म ध्याय
॥ ॥ यो कथा हा जसरो कहला अस्ति व्रत गाल जसले मेलला जो म नले
पीतायो सोहि पुरा हिंद पुत्र मल धन कामे वा दा पुष्पा पीता पुत्र ५ द्वा
हृन्दा यला श्री बुद्ध का व्रत जानी जन हस्त ले गव ॥ १ ॥ ॥ ॥ इति
११६२३ सोल नीती पुत्र जे चलाइ होइ अम

नारदये ४० को स र सु दु मा ७ अं का धि १२ र
सर्व पु लं का ग द र व न्द ला व म को ॥ १४ ॥ तं को
को र जा दु ग दु वि मि से रा वा इ द्रिया को ॥ अज
नो अ न्ता ५ सु प्ती हि म्मा वी भु ग ती भ म्मा को
॥ १५ ॥ नो लो र को ती को लो मि लो ५ म्मा १०० पा या क
॥ १६ ॥ सु द्रु आ ता र कि र्ति कुरु वा मि मि म्मा १० ५ को
॥ १७ ॥ व न्द म्मा कि र्ति को जी व न्द वी चे को धि ता म्मा
॥ १८ ॥ इ राम व ० पु ३ अ ३ ध्या मा कि र्ति को ॥ १९ ॥ अं न्ता
ली ये का ली द म्मा ५ म्मा ३ अं न्ता को दे वा ता म्मा १०
॥ २० ॥ ला द्रु द म्मा दि म्मा ३ अं न्ता को दे वा ता म्मा १०
॥ २१ ॥ ला द्रु स व म्मा ३ अं न्ता को दे वा ता म्मा १०

